IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 20, Issue 10, Ver. I (Oct. 2015) 100-102
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी सशक्तिकरण की स्थिति : एक अध्ययन

* डॉ. आलोक कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email: alok.dsmru@gmail.com

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही हम नारी की महत्ता एवं शक्ति को 'नारी तू नारायणी' जैसे कथनों से प्रतिपादित करते आये हैं। मनु का भी कथन है कि 'जहाँ नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं ।[1] यदि हम धर्मशास्त्रों और धर्मावलम्बियों के दिये हुए मतों पर गौर करें या फिर अपनी प्राचीन परम्पराओं के उदाहरणों पर नजर डालें, ये सभी नर और नारी की समानता एवं नारी सशक्तिकरण की बात को सिद्धान्तः स्वीकार करते हैं।

प्राचीन भारत में महिलाओं के सशक्त स्थिति के अनेक उदाहरण रेखांकित किये जा सकते है। भारतीय संस्कृति में यह स्वीकारा गया है कि सृष्टि के आरम्भ से ही परमात्मा ने अपने को दो रूपों में विभक्त किया है- वाम भाग से स्त्री तथा दक्षिणभाग से पुरूष। इसलिए प्रारम्भ से ही आर्य पुरूष नारी को अर्द्धांगिनी मानता आया है। प्राचीन काल से ही नारियों को समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त होता रहा है। नारी को माता, पत्नी एवं पुत्री सभी रूपों में पूजित माना गया है, क्योंकि गृह का अस्तित्व नारी के अस्तित्व में ही निहित माना जाता है।[2] इन सभी रूपों के माध्यम से वह अपने अधिकार एवं कर्तव्यों का भलीभांति निर्वहन करती थी। भारतीय संस्कृति में नारियों के प्रति यह केवल शाब्दिक सादृष्यभाव का ही प्रदर्शन मात्र नहीं, अपितु गृहस्थ जीवन में पग-पग पर इसकी व्यावहारिकता भी सिद्ध होती है। परिवार तथा समाज में नारी को उसके प्रत्येक रूप में यथोचित सम्मान दिया जाता था।

किसी भी देश अथवा समाज की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उस समाज अथवा देश की स्त्रियों की दशा कैसी है। इस दृष्टिकोण से भारतीय समाज में स्त्रियों को प्रारम्भसे ही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी महत्ता थी। इस संबंध में विद्वान अल्तेकर का कथन उल्लेखनीय है कि 'विश्व की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं का अध् ययन करते समय हम जितने प्राचीनतम काल की ओर जाते हैं, स्त्री का स्थान समाज में उतना ही असन्तोषजनक पाते हैं। जबकि इसके विपरीत जब हम भारतीय सभ्यता के प्राचीनतम काल पर दृष्टिपात करते हैं, तो स्त्रियों का स्थान समाज में उतना ही महत्वपूर्ण पाते हैं।[3] वास्तव में गृह का अस्तित्व स्त्री के अस्तित्व में ही निहित माना जाता था। यही कारण है कि धर्मशास्त्रकारों ने स्त्री एवं पुरुष को अर्द्धांगिनी माना। वे पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थीं और सामाजिक एवं धार्मिक कृत्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'अकेला पुरुष अपूर्ण है और जब वह विवाह करके सन्तान उत्पन्न करता है, तभी पूर्ण होता है।[4] महाभारत के अनुसार, 'स्त्री के बिना पुत्र, पौत्र तथा नौकर-चाकर से सम्पन्न परिवार भी वन के समान है। वही गृह की शोभा है, वही धर्म, अर्थ तथा काम का मूल है। परिवार की समृद्धि उसी पर निर्भर करती है। अतः कल्याण की आकांक्षा रखने वाले लोगों को सदैव उनका सम्मान करना चाहिए।[5] मनु के अनुसार 'जहां स्त्रियां दुखी नहीं रहती, उस कुल की वृद्धि होती है, लेकिन जहां स्त्रियां दुखी रहती हैं, वह कुल शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है। जिन घरों में स्त्रियां अपमानित होकर श्राप देती हैं, वे पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। इसलिए उन्नति चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को स्त्रियों का समुचित आदर-सत्कार करना चाहिए।[6] यद्यपि परिस्थितियों के परिणामस्वरूप समय-समय पर उनके ऊपर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध भी लगाए जाते रहे हैं, जिससे सार्वजनिक जीवन से उनका सम्बन्ध नष्टप्राय भी होता रहा। लेकिन परिवार तथा समाज में उनके आदर और सम्मान में कोई कमी नहीं आयी और उन्हें यथोचित स्थान प्राप्त रहा।

वैदिककालीन समाज में स्त्रियों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण थीं। पुरुषों की भांति उनका भी उपनयन संस्कार होता था और वे ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश कर उच्चतम आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करती थीं। इस काल में हमें अनेक विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं, जिन्होंने ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का प्रणयन किया था। इनमें लोपामुद्रा, विश्वाधारा, अपाला, घोषा, इन्द्राणि, निवावरी तथा उर्वशी आदि स्त्रियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यजुर्वेद के अनुसार कन्या का विवाह ब्रह्मचर्यावस्था समाप्त करने के पश्चात ही करना चाहिए।[7] अथर्ववेद के अनुसार विवाहोपरांत वहीं स्त्री सफल हो सकती है, जिसे ब्रह्मचर्यकाल में भलीभांति शिक्षित किया गया हो।[8] उपनिषदों में भी अनेक विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं, जो दर्शन, तत्वज्ञान और तर्क में निपुण थीं। इसके साथ-साथ उपनिषदों में कुछ ऐसी विशिष्ट क्रियाओं के भी उल्लेख मिलते हैं, जिनसे लोग विदुषी कन्याओं को पुत्री के रूप में प्राप्त करने की कामना करते थे।[9] ये उद्धरण इस बात के प्रमाण है कि स्त्रियां बिना किसी भेदभाव के उच्चतम बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करती थीं। शिक्षा, ज्ञान और विद्ववता के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि याज्ञिक कार्यों में भी वे अग्रणी थीं। बृहदारण्यकोपनिषद् में विदेहराज जनक की राज्यसभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य जैसे विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ का उल्लेख मिलता है, जिसमें गार्गी ने याज्ञवल्क्य को अपने गूढ़ प्रश्नों से मूक कर दिया था।[10] इसी प्रकार याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी भी विदुषी और ब्रह्मवादिनी महिला थी।[11] इस काल में स्त्रियां बिना पर्दे के स्वछन्दतापूर्वक विचरण करती थीं। वे पुरुषों की भांति सामाजिक और धार्मिक समारोहों, उत्सवों तथा सभा-विचारगोष्ठियों में बिना किसी प्रतिबंध के सम्मिलित होती थीं और विचारों का आदान-प्रदान करती थीं। ऐसे समारोहों तथा उत्सवों में उनका सम्मिलित होना स्वागत योग्य माना जाता था। इस काल में स्त्रियों को अपना जीवन साथी चुनने की भी पूर्ण स्वतंत्रता थी। विवाह प्रायः पूर्ण वयस्क होने पर ही किया जाता था। ऋग्वेद के एक मंत्र में विवाह के अवसर पर कन्या को सास, श्वसुर, ननद और देवर आदि पर साम्राज्ञी के रूप में शासन करने का निर्देश दिया गया है।[12] लेकिन यहाँ साम्राज्ञी से तात्पर्य कठोरता और आदेश से नहीं था, अपितु वह स्नेह. सेवा, न्याय और उदार चित से परिवार पर शासन करती थी। वह पुरूषों की सहधर्मिणी मानी जाती थी। धार्मिक कार्यों में उसकी उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। पत्नी के बिना कोई पुरुष यज्ञ का अनाधिकारी कहा गया है।[13] पत्नी केवल पति के साथ धार्मिक कृत्य कर सकती थी।[14] समाज में विधवा विवाह तथा नियोग प्रथा का प्रचलन था, जिससे उसकी सामाजिक स्थिति की उन्नत दशा का पता चलता है। सती प्रथा, बाल विवाह तथा पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों का समाज में प्रचलन नहीं था। यद्यपि कालानुसार परिस्थतियों में परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था में विकृति आते रहने से स्त्रियों की सामाजिक दशा में समय-समय पर गिरावट भी आती रही है।

महाकाव्यों के अनुसार भी समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। स्त्रियों की शिक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता था। सीता प्रतिदिन वैदिक सूक्तों द्वारा संध्यापूजन करती थी।[15] राम के युवराज पद पर अभिषेक के समय कौशल्या ने यज्ञ करने[16] का और बालि के युद्ध में प्रस्थान करने से पूर्व उसकी पत्नी तारा द्वारा यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है।[17] महाभारत के अनुसार कुन्ती अथर्ववेद में, गान्धारी अर्थशास्त्र में, द्रौपदी नीतिशास्त्र में तथा सुभद्रा, दमयन्ती, विदुला और सत्यवती राजनीतिशास्त्र में प्रवीण थीं। क्षत्रिय स्त्रियों को सैनिक विद्या तथा प्रशासकीय शिक्षा भी दी जाती थी, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे युद्ध क्षेत्र में तथा शासन-प्रशासन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निमा सकें। कैकेई इसका उदाहरण है। माता के रूप में स्त्री गुरू से भी बढ़कर मानी जाती थीं। उसका पतिव्रत धर्म और सतीत्व की भावना श्रेष्ठ एवं आदर्शमय थी। सावित्री, दयमन्ती और सीता का पतिप्रेम व सतीत्व तथा सुभद्रा और उर्मिला का त्याग और संतोष उच्च कोटि का था। वे बिना किसी प्रतिबन्ध के सामाजिक उत्सवों तथा समारोहों में भाग लेती थीं। रामायण में सीता का विचरण और महाभारत में द्रौपदी का भ्रमण उनकी उन्मुक्तता और स्वच्छन्दता को अभिव्यक्त करता है। रामायण में सीता के न होने से राम को अश्वमेध यज्ञ करते समय अपनी पत्नी की स्वर्णिम प्रतिमा बनवानी पड़ी थी। स्वयंवर की प्रथा का प्रचलन यह स्पष्ट करता है कि कन्याओं का विवाह युवा होने पर ही किया जाता था। समाज में स्त्रियों के प्रति आदर और सम्मान की भावना थीं। महाभारत के अनुसार नारी न केवल पूजा योग्य थी, वरन् परिवार का सौभाग्य भी उसी पर निर्भर करता था। स्त्री से ही धर्म तथा काम की पूर्ति होती है। अतः उसका सम्मान करना चाहिए।

बौद्ध ग्रन्थों से भी समाज में स्त्रियों की उच्च स्थिति का पता चलता है। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। महात्मा बुद्ध द्वारा स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने की अनुमति देने के कारण उन्हें पुरुषों की भांति उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला, जिससे उनकी सामाजिक दशा का उन्नयन हुआ। बौद्ध ग्रन्थों में हमें खेमा, भद्रकुण्डलकेशा, सुभा, सुमेधा, अनोपमा, सुभद्रा आदि अनेक विदुषी एवं सशक्त महिलाओं का उल्लेख मिलता है।" अर्थशास्त्र में भी स्त्रियों की स्थिति को सशक्त करने के लिए उन्हें सैन्य शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है। सातवाहन राजवंशी नागनिका तथा वाकाटकवंशी प्रभावती गुप्ता ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने अल्पवयस्क पुत्रों की संरक्षिका बनकर कुशलतापूर्वक शासन का संचालन किया था। चालुक्य वंश की अनेक रानियों तथा महिलाओं ने, जिसमें अक्का देवी, विजयभट्टारिका, लक्ष्मीदेवी के नाम विशेष रूप से

प्रसिद्ध है, साम्राज्य के प्रान्तों तथा जिलों के शासकों के रूप में कार्य किया था। इसी प्रकार कश्मीर की अनेक रानियों दिद्दा, सुगन्धा, सूर्यमती तथा रत्नादेवी ने कुशलतापूर्वक शासन संचालन किया और युद्ध में सेना का नेतृत्व किया।

शिक्षा महिलाओं की स्थिति सुधारने, आत्मविश्वास जगाने, आत्मसम्मान की भावना पैदा करने, सही ढंग से सोच-विचार की योग्यता बढ़ाने, समाज में परिवर्तन लाने एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का कार्य करती है। सामाजिक एवं आर्थिक नीति का ढांचा महिला शिक्षा से प्रभावित होता है। प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था। इसी प्रकार स्त्रियों को संगीत, नृत्य, वाद्य तथा चित्र आदि ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी।

विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा को अर्जुन से संगीत की शिक्षा दिलायी थी। शुक्र ने भी अपनी पुत्री देवयानी को अपने आश्रम में संगीत, नृत्य तथा वाद्य की शिक्षा दी थी। वात्स्यायन के अनुसार कन्याओं को पुस्तक वाचन, काव्य, पुराण, प्रहेलिका, नृत्य, संगीत तथा चित्रकला आदि चौंसठ कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। साधारण परिवारों में कन्याओं को मुख्य रूप से गृहविज्ञान की शिक्षा दी जाती थी, क्योंकि यह माना जाता था कि स्त्रियां ही गृहस्थाश्रम की कर्णधार होती है और आदर्श स्त्रियां ही आदर्श पुत्र, आदर्श परिवार और आदर्श समाज का निर्माण कर सकती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में महिलाओं के सशक्तीकरण की स्थिति अत्याधिक समृद्ध थी। उन्हे पुरूषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के अवसर प्राप्त थे तथा उनका प्रदर्शन भी पुरूषों से कही कमतर नही था।

सन्दर्भ :

1. मनुस्मृति, ३/५५-५६।
2. ऋग्वेद, ३/५३/४ 'गृहणी गृहमुच्यते ।।
3. ए० एस० अल्तेकर प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ०,१५५।
4. शतपथ ब्राह्मण, ५/२/१/१०। 'एतावानेव पुरुषो यज्जाऽऽत्मा प्रजति ह। विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्यो भती सा स्मृतांगना ।।'
5. महाभारत, १/७४/४१-४२, १३/७८.३४.५/३८/११,१२/४४/५-६।
6. मनुस्मृति, ३/५५-५६।
7. यजुर्वेद ८/१। 'उपयाम गृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्तवा । विष्णऽउरूगायैण सोमस्तं रक्षस्व मा त्वा दमन् ।।'
8. बृहदारण्यकोपनिषद्, ६/४/१७।
9. अथर्ववेद, ६/५/१८। 'ब्रह्मचवर्येण कन्या युवानं विन्देत पतिम् ।' 'अथ या इच्छेत-दहिता मे पण्डिता जायेतसर्वमायुरियादिति । तिलौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरी जवयितवै ।।
10. वही, ३/६/८/
11. वही, ३/४/२,४/५/१।
12. ऋग्वेद, ५/१०/८५। 'साम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव। ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राडी अधि देवृष ।।'
13. शतपथ ब्राह्मण, ५/१/६/१०। 'अयज्ञीयो वा एष योऽपत्नीकः ।'
14. ऋग्वेद, ४/२४/८.४/४२/६.८/११/१\
15. रामायण, ५/१५/४८। 'सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी। नदीचेमां शुभजलां सन्ध्यार्थ वरवर्णिनी ।।'
16. वही, २/२०/१५। 'साक्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रत परायणा। अगिंन जुहोतिस्म तदा मंत्रविद् कृतमंगला ।।'
17. वही, ४/१६/१२। 'ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मंत्रविद्विजधैषिणी ।